मनोज सर

बी.एड. प्रथम वर्ष

बाल्यावस्था और उसका विकास

Course – 01

Manoj sir

Unit – 1 : बाल्यावस्था की समझ :

- ❖ बाल्यावस्था की समझ : विकासात्मक परिप्रेक्ष्य
- ❖ बाल्यावस्था के आयाम : सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक
- ❖ बाल्यावस्था के प्रमुख घटक : परिवार, पड़ोस, समुदाय एवं विद्यालय
- ❖ बालक एवं बाल्यावस्था : बिहार के वास्तविक संदर्भ में।
- ❖ राष्ट्रीय लक्ष्य के संबंध में : पूर्व बाल्यावस्था शिक्षा के सामान्य उद्देश्य
- ❖ आनन्दायी बाल्यावस्था की धारणा : मुख्य संवाद एवं शैक्षिक निहितार्थ
- ❖ वैयक्तिक विकास के आयाम : शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषिक, सामाजिक एवं नैतिक इनके अंतः संबंध एवं शिक्षकों के लिये निहितार्थ। (पियाजे, इरिक्सन और कोह्लवर्ग संदर्भ में)

Unit – 2 : किशोरावस्था की समझः

- ❖ किशोरावस्था : धारणा, रूढ़ि और समग्र रूप में समझ की आवश्यकता
- ❖ मुख्य मुद्दे : वृद्धि एवं परिपक्वता, स्वाभाव एवं देख–भाल, निरंतरता एवं अनिरंतरता
- ❖ किशोरावस्था के रूप में अध्येता : विकास के चरण, शैशवावस्था से किशोरावस्था तक वृद्धि एवं विकास के विभिन्न चरणों की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर विकासात्मक कार्य।
- ❖ किशोरावस्था को प्रभावित करने वाले कारक : सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक
- ❖ किशोरावस्था : क्रियाकलाप, महत्त्वाकाँक्षा, अध्येता के द्वंद और चुनौतियाँ
- ❖ बिहार में किशोरों की प्रासंगिक सत्यता
- ❖ किशोरों के साथ व्यवहार : शिक्षकों की भूमिका, परिवार, समुदाय व राज्य भूमिका पर संवाद

Unit – 3 : सामाजिकरण एवं अध्येता संदर्भ की समझः

- ❖ सामाजिक समझ
- ❖ घर के संदर्भ में सामाजीकरण : परिवार सामाजिक संस्था के रूप में, पालन–पोषण का ढंग और उसका प्रभाव, अभिभावकीय उम्मीदों एवं मूल्यों का प्रसारण
- ❖ सामाजिक और समुदाय का संदर्भ : पड़ोस विस्तारित परिवार, धार्मिक समूह एवं उनकी सामाजिक संक्रिया

- ❖ सामाजिकरण और स्कूल का संदर्भ : विद्यालय प्रवेश का प्रभाव, विद्यालय एक सामाजिक संस्थान के रूप में और बिहार में इसकी धारणा, स्कूली संदर्भ में मूल्य का निर्धारण।
- ❖ पहचान निर्माण की प्रक्रिया में विद्यालय की पढ़ाई–लिखाई, आरोपण, अभिग्रहण, विकास
- ❖ लिंग पहचान और समाजीकरण में : परिवार, स्कूल, औपचारिक और अनौपचारिक संगठन के अभ्यास, लड़कियों की पढ़ाई–लिखाई।
- ❖ समाज में विषमताएँ एवं प्रतिरोध : दाखिला, धारण व बहिष्कार के मुद्दे

Unit – 4 : अध्येता में विभिन्नता की समझ :

- ❖ सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ आधारित अध्येता–विभिन्नता : घरेलू एवं अनुदेश की भाषा का अध्येता पर प्रभाव, अध्येता के व्यकलित ''सांस्कृतिक पूंजी'' का प्रभाव
- ❖ अध्येता की व्यक्तिगत विभिन्नता : बहु–बुद्धि, सीखने के तरीके, स्व–अवधारणा, स्व–सम्मान, अभिवृत्ति, अभियोग्यता, कौशल व दक्षता, रूचि, मूल्य, नियंत्रण और व्यक्तित्व का स्थान विशेष
- ❖ अलग तरह से योग्य अध्येता की समझ : मन्द गति के अध्येता, डिस्लेक्सिक अध्येता।
- ❖ व्यक्तिगत विभिन्नता आकलन के तरीके : जाँच, अवलोकन निर्धारण–मापनी, स्व प्रतिवेदन
- ❖ व्यक्तिगत भिन्नता हेतु प्रबंधन : समूहन, वैयक्तिक अनुदेशन, निर्देशन एवं उपबोधन, सेतु पाठ्यक्रम, संवर्धन गतिविधि और क्लब।

Unit – 5 : अधिगमकर्त्ता पहचान का विकास :

- ❖ पहचान निर्माण की समझ, विविध सामाजिक एवं संस्थानिक संदर्भ में विविध पहचानों का अविभाव, आंतरिक संसक्तता की जरूरत, द्वंद को व्यवस्थित करना।
- ❖ समूह एवं व्यक्तिगत पहचान निर्माण के निर्धारक, सामाजिक कोटि–जैसे कि जाति, वर्ग, लिंग, धर्म, भाषा और आयु
- ❖ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में पहचान–निर्माण रूप में विद्यालय, विद्यालय, संस्कृति एवं लोकाचार, शिक्षण अधिगम अभ्यास एवं वर्ग कक्ष में शिक्षक संवाद, मूल्यांकन अभ्यास
- ❖ मूल्य प्रणाली एवं विद्यालय की प्रच्छन्न पाठ्यचर्या
- ❖ समवय समूह, मीडिया, प्रद्यौगिकी एवं वैश्वीकरण का पहचान–निर्माण में प्रभाव।

Mr Anil Sinha sir and Harendra sir

Course – 02 : समकालीन भारत और शिक्षा :

Unit – 1 : शिक्षा की अवधारणा एवं वृहद् उद्देश्यों की समझ :

- ❖ अवधारणा : शिक्षा के अर्थ एवं परिभाषा, शिक्षा की प्रक्रिया – स्कूल की पढ़ाई, अनुदेशन, प्रशिक्षण एवं शिक्षा देना
- ❖ शिक्षा के रूप : औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक
- ❖ उद्देश्य : अर्थ एवं प्रकार्य, शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण, वैयक्तिक संबंध में शिक्षा के उद्देश्य, समाज/राष्ट्र संबंध में शिक्षा के उद्देश्य, वैयक्तिक व सामाजिक उद्देश्यों के बीच दार्शनिक विरोधाभास एवं उनके संश्लेषण

Unit – 2 : भारतीय शिक्षा के नियामक/निदेशात्मक दृष्टिकोण :

- ❖ भारतीय शिक्षा का निदेशात्मक अभिविन्यास : एक ऐतिहासिक खोज
- ❖ राष्ट्रीय आदर्श पर चिन्तन प्रस्तुत करने वाले संवैधानिक प्रावधान : प्रजातंत्र, समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षवाद एवं सामाजिक न्याय
- ❖ भारत एक विकासशील राष्ट्र, राज्य रूप में : दृष्टि, प्रकृति एवं खास गुण, प्रजातांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष नागरिकता, संघीय ढाँचा : शिक्षा पद्धति के निहितार्थ।
- ❖ शिक्षा के उद्देश्य एवं प्रयोजन : निदेशात्मक दृष्टिकोण से
- ❖ राष्ट्रीय विकास हेतु शिक्षा : शिक्षा आयोग (1964–66)
- ❖ उभरते विचार :
  - (i) राजनीतिक प्रक्रिया और शिक्षा के बीच
  - (ii) आर्थिक विकास और शिक्षा के बीच
  - (iii) सामाजिक, सांस्कृतिक बदलावों के बीच।

Unit – 3 : शिक्षा के दार्शनिक दृष्टिकोण व दार्शनिक पद्धतियाँ :

- ❖ दर्शन और शिक्षा : दर्शन का अर्थ और परिभाषा, दर्शन की शाखायें एवं उनका शैक्षिक समस्यायों एवं मुद्दों के साथ संबंध।
- ❖ दार्शनिक पद्धतियाँ : दर्शन के प्रकार–आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, मार्क्सवाद एवं मानववाद; यर्थाथ, ज्ञान एवं मूल्य की अवधारणा के विशेष संदर्भ में उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण–विधि और अनुशासन हेतु शैक्षिक निहितार्थ।

UNIT-4 : **शिक्षा के दार्शनिक दृष्टिकोण : शैक्षिक विचारक :**

- ❖ निम्न विचारकों के द्वारा शिक्षा के **'दर्शन एवं उपयोग'** के मुख्य गुणों के रखे पक्षों का विहंगावलोकन
- ❖ भारतीय दार्शनिक विचारकः– आर0एन0 टैगोर, एम0के0 गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, अरविन्दो घोष, जे0 कृष्णामूर्ति और गिजू भाई बधेका।
- ❖ पाश्चात्य विचारकः– प्लेटो, रूसो, डीवी, फ्रोबेल और मारिया माण्टेसरी

UNIT-5 : **समकालीन भारतीय स्कूल के तरीके :– विचार व मुद्दे :**

- ❖ **विद्यालयी शिक्षा का सर्वव्यापीकरण : शिक्षा का अधिकार और सर्वव्यापी पहुँचः**
  1. (a) सर्वव्यापी नामांकन (b) सर्वव्यापी ठहराव (c) सर्वव्यापी उपलब्धि के मुद्दे
  2. समता एवं समानता के मुद्दे–

     उक्त चर्चा का विशेष संदर्भ भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, विशेषकर बालिकाओं व कमजोर–वर्ग के साथ–साथ 'अलग तरह के योग्य' (Differently-abled) बच्चों के लिये रहेगा।

- ❖ **शैक्षिक अवसरों की समानता :–**
  1. समानता के अर्थ व संवैधानिक व्याख्या
  2. असमानता के प्रचलित रूप एवं प्रकृति साथ ही साथ प्रभावकारी समूह व अल्प समूहों से संबंधित मुद्दे।
  3. विद्यालयों में असमानता :– सरकारी–निजी स्कूल, ग्रामीण–शहरी स्कूल, एकल शिक्षकीय स्कूल और कई तरह से विद्यालीय पद्धति में असमानता के मुद्दे एवं असमानता को बढ़ावा देने वाली प्रक्रियायें।
  4. विद्यालयी शिक्षा में भेदकारी गुण :– विद्यालय गुणवत्ता में अन्तर
- ❖ **सामान्य स्कूल पद्धति के विचार**
- ❖ **शिक्षा का अधिकार– कानून विधेयक व इसके प्रावधान**

संजीव सर

COURSE-3

Mr.Sanjeev Kumar Sir

अधिगम एवं शिक्षण

UNIT-1 अधिगम, प्रकृति, प्रकार और रणनीतियाँ :–

- ❖ अधिगम के प्रकृति एवं अवधारणा, सम्प्रत्यय अधिगम, कौशल अधिगम, मौखिक अधिगम, सामाजिक अधिगम, अधिगम सिद्धांत, समस्या समाधान
- ❖ बुनियादी मान्यता और अधिगम सिद्धांत के प्रासंगिकता का विश्लेषण व्यवहारवादी, सामाजिक, सज्ञानात्मक एवं मानववादी अधिगम सिद्धांत
- ❖ ज्ञान की रचना की प्रक्रिया अधिगम :– अधिगम हेतु रचनावादी उपागम
- ❖ अधिगमकर्त्ता के योग्यता तथा विद्यालय प्रदर्शन से अधिगम का संबंध

UNIT-2 अधिगम को प्रभावित करनेवाले कारक एवं अधिगम के प्रबंधन :–

- ❖ अभिप्रेरणा की अवधारणा, प्रकार एवं इसे बढ़ाने की तकनीक
- ❖ स्वास्थ्य, नींद, कार्य की कठिनाई, विषय वस्तु एवं अध्ययन की आदत जैसे कारक जो अधिगम को प्रभावित करता हो
- ❖ अधिगम विधि का प्रभाव – आशिंक एवं पूर्ण अधिगम, सतही एवं गहन अधिगमः पूर्व अधिगम का वर्तमान अधिगम पर प्रभाव, अधिगम स्थानांतरण की रणनीतियाँ
- ❖ वर्ग कक्ष अधिगम विस्मरण – अर्थ और इसका कारण, अधिगम संधारण को विकसित करने की रणनीति
- ❖ कौशल सीखने के लिए अधिगम के अर्थ, स्वाध्याय विकसित करने के तरीके

UNIT-3 शिक्षण और शिक्षक की समझ :–

- ❖ शिक्षण क्या है? शिक्षण एक योजनाबद्ध क्रियाकलाप रूप में शिक्षण योजना निर्माण के तत्व
- ❖ मूलभूत शिक्षण अवधारणा और शिक्षण के योजना पर उसका प्रभाव
- ❖ शिक्षण में प्रवीणता, जागरूकता, निपुणता, सामर्थ्यता और बचनवद्धता का स्थान एवं अर्थ।
- ❖ शिक्षण प्रभाविता के मूलभूत तत्व– व्यवहारवाद, मानववाद और रचनावाद के परिपेक्ष्य में।
- ❖ शिक्षक के कार्य एवं भूमिका का विश्लेषण, पूर्व संक्रिया अवस्था में कौशल एवं दक्षता – योजना दृष्टिगत करना, परिणाम पर निर्णय करना (बनाना), तैयारी और संगठन/अन्तः क्रिया अवस्था– सहज एवं व्यवस्थित अधिगम/उत्तर क्रिया अवस्था–अधिगम परिणाम का आकलन, पूर्ब अवस्था अन्तः क्रिया अवस्था एवं उत्तर क्रिया अवस्था पर विचार विमर्श या चिन्तन
- ❖ प्रभावशाली शिक्षक से संबंधित विशिष्ट गुण, पेशेवर शिक्षक का पहचान–अपरिहार्य क्या है?

UNIT-4 शिक्षण के लिए योजना :–

- ❖ शिक्षण कार्य योजना दृष्टिगत करना– अध्येता एवं अधिगम तत्परता के विशिष्ट लक्ष्ण, विषय वस्तु और उसके अन्तः संबंध, अधिगम स्रोत एवं उपागम/रणनीतियाँ
- ❖ अधिगम परिणाम पर निर्णय लेना/करना – सामान्य लक्ष्य तय करना उद्देश्यों का विशिष्टिकरण और अधिगम के लिए मानढण्ड, विभिन्न क्रियाकलाप एवं गृहकार्य के लिए अनुदेशात्मक समय निर्धारण/अधिगम में अनुदेश समय एक चर रूप में
- ❖ अनुदेशात्मक उपागम एवं रणनीतियों पर निर्णय करना– विवरणात्मक या अन्बेषण उपागम व्यक्तिगकता या लघू समूह या पूरा वर्ग–विषय बस्तु में अधिगमकर्त्ता को शामिल बनाये रखने के लिए कौशल की आवश्यकता (तय रणनीति संदर्भ में)
- ❖ अनुदेशन के लिए तैयारी– उपलब्ध अधिगम के स्रोत का चुनाव एवं पहचान या आवश्यक अधिगम स्रोत का विकास
- ❖ एक योजना का तैयारी– ईकाई योजना एवं पाठ् योजना

UNIT-5 शिक्षण का कौशल और तरीका :–

- ❖ पाठकों को परिचित कराना– आवश्यकता एवं विभिन्न सम्भावनाएँ
- ❖ अधिगमकर्त्ता को प्रेरित करना और उनके ध्यान को बनाये रखना– अध्यापन विभिन्नता का महत्व और कौशल के रूप में पुनर्बलन
- ❖ ऐसा प्रश्न पूछना दृष्टान्त एवं व्याख्या एक शिक्षक के दक्षता के रूप में वर्ग–कक्ष में अध्यता–अधिगमत अंतर्गत
- ❖ शिक्षण की रणनीतियाँ–
    a. विवराणात्मक तरीका/शिक्षण उपागम समझ के लिएः प्रस्तुतीकरण–परिचर्चा, प्रदर्शन, आग्रम संघटक प्रतिमान
    b. पूछ–ताछ उपागम, विचारशील शिक्षण कौशल एवं ज्ञान का संरचना के उपागम के रूप में–अवधारणा प्राप्ति/अवधारणा निर्माण, आगमन चिंतन, समस्या आधारित अधिगम/परियोजना आधारित अधिगम
- ❖ वैयक्तिक अनुदेश उपागमः कम्प्यूटर व्यवस्थित निर्देशन, अभिक्रमित अनुदेशन क्रियाकलाप पैकेज
- ❖ छोटा समूह एवं पूरा समूह अनुदेश उपागम–सहयोग एवं समन्वित अधिगम उपागम, मस्तिष्क उद्धेलन, भूमिका निभाना, नाटकीकरण, समूह परिचर्चा, अनुरूपण एवं खेल, वाद–विाद, प्रश्नोत्तरी एवं अध्ययन गोष्ठी।

COURSE-4

पाठ्यचर्या में भाषा

Sri Harendra Ram Sir

UNIT-1 अधिगमकर्त्ता एवं उनकी भाषा :–

- ❖ भाषा का अर्थः विभिन्न रूप, पद्धति एवं विशेषताएँ
- ❖ विद्यालय में प्रवेश से पूर्व अध्येता की भाषा एक पूँजी रूप में।
- ❖ स्कीनर, चॉम्स्की, पियाजे एवं वायगोत्स्की के विशेष संदर्भ में, बच्चें भाषा कैसे सीखते है?
- ❖ अर्जित भाषा एवं सीखने की भाषा में अन्तर।
- ❖ भाषा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ, भाषा एवं लिंग, भाषा एवं अस्मिता, भाषा एवं शक्ति, भाषा एवं वर्ग (समाज)
- ❖ भाषा का राजनीतिक संदर्भ, बिहार और भारत हेतु बहुभाषीय संदर्भ, भाषा से संबंधित भारत में संवैधानिक प्रावधान

UNIT-2 विद्यालीय पाठ्यचर्या में भाषा :–

- ❖ घरेलू एवं स्कूली भाषा, समझने का माध्यम (बच्चों की अपनी भाषा)
- ❖ सीखने में भाषा का केन्द्रीकरण
- ❖ समग्र पाठ्यचर्या में भाषा, पाठ्यचर्या में भाषा के महत्व एवं भूमिका
- ❖ भाषा व ज्ञान की रचना, भाषा सीखने के उद्देश्य की समझः–कल्पना, सृजनात्मकता संवेदनशीलता, कौशल विकास
- ❖ स्कूली विषय की भाषा, सीखने एवं सम्प्रेषण के रूप में भाषा के अन्तर
- ❖ अनुदेशन के माध्यम का समीक्षात्मक समालोचना, स्कूल के विभिन्न पंजीकृत विषय
- ❖ बहुभाषी वर्गकक्ष, बहुसांस्कृतिक जागरूकता एवं भाषा शिक्षण

UNIT-3 भाषा शिक्षा की नीतियाँ एवं संवैधानिक प्रावधान :–

- ❖ भारत में भाषा की स्थिति, अनुच्छेद 343–351, 350A
- ❖ कोठारी कमीशन की अनुशंसा (1964–66), NPE-1986 POA-1992
- ❖ राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा– 2005 (भाषा–शिक्षा)

हरेन्द्र महाशय

Mr.Sanjeev Kumar, Sir

COURSE-5

श्री संजीव महाशय

अनुशासन एवं 'विषयो' की समझ

UNIT-1 अनुशासन एवं विषयों की मूलभूत समझ :–

- ❖ अनुशासन क्या? अनुशासनकी अवधारणा का इतिहास
- ❖ अकादमिक अनुशासन क्या? अनुशासन और विषयों में मानवीय ज्ञान के वर्गीकरण की आवश्यकता/परिप्रेक्ष्य
  1. दार्शनिक परिप्रेक्ष्य :– एकता एवं अनेकता
  2. मानविकी परिप्रेक्ष्य :– संस्कृति एवं वर्ग
  3. सामाजिक परिप्रेक्ष्य :– व्यवसायीकरण एवं श्रम का बँटवारा
  4. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :– विकास एवं अलगाव
  5. प्रवंधन परिप्रेक्ष्य :– बाजार एवं संगठन
  6. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य :– शिक्षण एवं अधिगम।
- ❖ 'अनुशासन' एवं 'विषय' में अन्तर; प्रकृति एवं प्रकार्य
- ❖ 'अनुशासन' एवं 'विषय' की मजबूती उएवं कमजोरियाँ
- ❖ विषयों की मूल प्रस्तावना/पक्ष एवं दर्शन
- ❖ राष्ट्रीय संदर्भ में अध्येता विकास हेतु विषय/अनुशासन के वृहत् उद्देश्य।

UNIT-2 अनुशासन/विषयों की उन्नति हेतु दक्षतायें :–

- ❖ विषयों पर पारंगतता
- ❖ विषयों का विस्तार करना
- ❖ विषय विशिष्ट पद एवं इनके उपयोग
- ❖ विषयों में परियोजना कार्य/गतिविधियों।
- ❖ विषयों/अनुशासन में शोधः–आँकड़ा संग्रहण के तरीके, निष्कर्ष निकालना, सामान्यीकरण और सिद्धान्त विकास, संदर्भ तैयार करना, टिप्पणी एवं संदर्भ सूची संचयिका।

UNIT-3 अंतर–विषय अधिगम एवं संबंधित मुद्दे :–

- ❖ अंतर विषयक अधिगम क्या? अंतर विषयक अधिगम–तर्कविद्या/न्यायिक प्रक्रिया
- ❖ अंतरविषयक विषय क्या?
- ❖ अंतरविषयक विषयों के सामान्य उद्देश्य
- ❖ अंतरविषयक विषयक हेतु क्या गहरी अनुशासनिकःसमझ जरूरी है?
- ❖ आप कैसे अंतरविषयक विषय का ढाँचा तैयार करेंगे व उन्हें आसान बनायेंगे?
- ❖ अंतर विषयक विषयों पर पहुँच कैसे?
- ❖ अंतरविषयक विषयों में गुणवता सुनिश्चित करने हेतु प्रयोग में लाये जा सकने वाली शर्तें।

COURSE-6

जेण्डर, स्कूल और समाज

UNIT-1 जेण्डर' मुद्दे :–

- ❖ जेण्डर, लिंग, लैंगिकता, पितृ सत्ता, पुरूषत्व व स्त्रीत्व
- ❖ लैंगिक पक्षपात, लैंगिक रूढ़ि विचार, और सशक्तिकरण।
- ❖ समता एवं समानता संबंध में :– वर्ण, वर्ग, धर्म, जाति–समूह गुण, शारीरिक अक्षमता और क्षेत्रीयता
- ❖ महिला अध्ययन से जेण्डर अध्ययन की ओर प्रतिमान विस्थापन
- ❖ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :– शिक्षा के महिला अनुभवों पर केंद्रित उन्नीसवी एवं बीसवीं सदी से सामाजिक सुधार आन्दोलन के कुछ मील के पत्थर
- ❖ समकालीन अवधि :– नीति क्रियान्वयन की अनुशंसा, आयोग समिति, स्कीम, कार्यक्रम और योजना

UNIT-2 जेण्डर', शक्ति और शिक्षा :–

- ❖ जेण्डर और शिक्षा के सिद्धान्त ; भारतीय संदर्भ में अनुप्रयोग
  - ▪ सामाजीकरण सिद्धान्त
  - ▪ जेण्डर विभिन्नता
  - ▪ संरचनात्मक सिद्धान्त
  - ▪ विखण्डन का सिद्धान्त
- ❖ जेण्डर अस्मिता/पहचान और सामाजीकरण प्रक्रिया
  - ▪ परिवार
  - ▪ स्कूल
  - ▪ अन्य औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन
- ❖ बालिका विद्यालयीकरण :– असमानता एवं व्यवधान (पहुँच, ठहराव और निराकरण के मुद्दे)

UNIT-3 पाठ्यचर्चा में 'जेण्डर' के मुद्दे :–

- ❖ जेण्डर, संस्था एवं संस्कृति, वर्ग, वर्ण, धर्म और क्षेत्र के प्रतिच्छेद
- ❖ पाठ्यचर्चा एवं 'जेण्डर' प्रश्न
- ❖ आजादी के समय से पाठ्यचर्या की रूपरेखा में जेण्डर की रचना (एक विश्लेषण)
- ❖ जेण्डर और प्रच्छन्न पाठ्यचर्या
- ❖ पाठ्य वस्तु और संदर्भ में जेण्डर (पाठ्यपुस्तकों का अन्य संकायों के साथ प्रतिच्छेदता, वर्ग–कक्ष प्रक्रिया, शिक्षाशास्त्रीय विचारों का समावेश)
- ❖ शिक्षक : परिवर्तन के अभिकर्त्ता
- ❖ जीवन कौशल और लैंगिकता

COURSE-7 (A)

CPss- 07 – इतिहास शिक्षण की विधि

UNIT-1 इतिहास शिक्षण की प्रकृति, महत्व और व्यापक उद्देश्य :–

A. **प्रकृति** एवं महत्व :–
- परिभाषा, अवधारणा और इतिहास के घटक/अवयव
- इतिहास के विभिन्न पहलूओं का अन्य विषयों जैसे–भूगोल, नागरिक, अर्थशास्त्र, विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी से सह–संबंध
- इतिहास शिक्षण के महत्व

B. **लक्ष्य एवं उद्देश्य :–**
- इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्देश्य
- इतिहास शिक्षण के उद्देश्य :– अनुदेशनात्मक व व्यवहारगत उद्देश्य एवं इनका पाठ्यचर्चा से संबंध
- शैक्षिक उद्देश्य के 'ब्लूम्स वर्गिकी''

UNIT-2 इतिहास पाठ्यचर्या :–
- पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त
- इतिहास पाठ्यचर्या और राज्य, NCERT पाठ्यपुस्तक विवाद, CBSE, ICSE, BSEB में इतिहास पाठ्यचर्या
- ऐतिहासिक सामग्री के चयन व संगठन :–
  a. सामान्य सिद्धान्त
  b. विशिष्ट सिद्धान्त :– सांस्कृतिक युगान्तर, संदर्भ ग्रंथ सूची, कालानुक्रमिकता, विषय प्रासंगिकता, समाकलन, संकेन्द्रिक, सर्पिल एवं इकाई उपागम
- अच्छे इतिहास पाठ्य–पुस्तक के गुण
- इतिहास में पाठ्यचर्या सुधार :– सामाजिक विज्ञान शिक्षण के संदर्भ में NCF-2005, BCF-2008 की आलोचनात्मक समीक्षा/मूल्य निर्धारण।

UNIT-3 अनुदेशात्मक रणनीति एवं इतिहास–शिक्षण की विधियाँ :–
- इतिहास शिक्षण की विधियाँ :– आगमन–निगमन विधि, कहानी कथन विधि, व्याख्यान विधि, परिचर्चा विधि, स्रोत विधि, परियोजना व समस्या समाधान विधि
- शिक्षण की तकनीक :– अनुकरण, खेल, सर्वेक्षण विधि, वृत अध्ययन, मस्तिष्क उद्वेलन, समूह शिक्षण
- समूह में अधिगम :– सहकारी एवं सहयोगी अधिगम, असमांगी कक्षा–कक्ष की शुरूआती जरूरत
- बिना बोझ के इतिहास अधिगम में ICT उपयोग
- इतिहास में विवादित प्रकरणों में शिक्षण

EPC-7 A

हिन्दी शिक्षण की विधियाँ

UNIT-1 प्रकृति, क्षेत्र और व्यापक उद्देश्य

- ❖ भाषाः– इसके अर्थ एवं प्रकार्य
- ❖ बालक की शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका
- ❖ हिन्दी भाषा एवं इसके वैश्विक प्रतिष्ठा की विशेष बातें– सांस्कृतक, सामाजिक, व्यवहारिक, साहित्यिक व भाषायी
- ❖ हिन्दी को मातृभाषा एवं राष्ट्र भाषा के रूप में शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य
- ❖ हिन्दी विभिन्न रूप :– हिन्दी ज्ञान की भाषा रूप में, हिन्दी में, द्वितीय एवं तृतीय भाषा रूप में, हिन्दी अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर
- ❖ मातृ भाषा शिक्षण में कठिनाइयाँ

UNIT-2 हिन्दी की पाठ्यचर्या :

- ❖ पाठ्यचर्या निर्माण के अर्थ एवं सिद्धान्त
- ❖ CBSE, ICSE, BSEB के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में वर्तमान हिन्दी पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक अध्ययन
- ❖ हिन्दी में पाठ्यचर्या सुधार :– भाषा शिक्षण संदर्भ में NCF-2005, BCF-2008 का आलोचनात्मक मूल्यांकन
- ❖ भाषा शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान एवं नीतियाँ– भारत में भाषा की स्थिति, अनुच्छेद–343–351, 350(A), कोठारी आयोग (1964–66), NPE(1986), POA (1992)
- ❖ हिन्दी में पाठ्य–पुस्तकें :– महत्व एवं गुण

UNIT-3 विशिष्ट अनुदेशात्मक रणनीति एवं शिक्षण विधि :

- ❖ गद्य का शिक्षण :– कहानी, नाटक, निबन्ध एवं उपन्यास, गद्य पाठ हेतु योजना के मुख्य चरण
- ❖ पद्य का शिक्षण :– पद्य पाठों के उद्देश्य, सस्वर वाचन के महत्व, पद्य पाठ योजना हेतु मुख्य चरण
- ❖ व्याकरण का पठन :– हिन्दी शिक्षण में व्याकरण का स्थान, आगमनात्मक व निगमनात्मक विधि व उनके तुलनात्मक गुण
- ❖ पठन के लिए शिक्षण :– अच्छे पठन के गुण, पठन के प्रकार मात्रा गिनकर पढ़ना, स्थूल पठन, विस्तार पठन, मौन पठन, जोर से बालते हुए पठन
- ❖ पठन के कई तरीके :– स्वर पठन, वर्ण विधि, शब्द विधि एवं वाक्य विधि
- ❖ शब्द संग्रह शिक्षण :– इसके तरीके, मौखिक कार्य, शब्द संग्रह बढ़ाने हेतु अभ्यास, वाक्य बनाना
- ❖ लेखन एवं रचना हेतु शिक्षणः– पत्र लेखन, निबंधन लेखन एवं संक्षेपण

principal sir

EPC-1

पाठ्य सामग्रियों के पठन व चिंतन

UNIT-1 कथात्मक और निर्देशात्मक विचारों के साथ शामिल होना

(चयनित पाठ्य–सामग्री में शामिल हो सकेगा– कहानी या उपन्यास के कोई अंश, नाटक की कोई घटना, विविध निर्देशात्मक विचार या यहाँ तक ही अच्छे तरह से प्रस्तुत की गई कोई कॉमिक की कहानियाँ)

प्रस्तावित गणिविधियाँ :–

- ❖ विचारों को समझते हुए ग्रहण कर पाना और उसे दृष्टिगत/कल्पना कर पाने हेतु, पठन, (व्यक्तिगत, समूह–पठन और परिचर्चा/व्याख्या)
- ❖ विचारों का पुनः कथन :– विभिन्न विचार विन्दुओं से अपने शब्दों में कथन (छोटे समूहों में नई स्थिति बनाना)
- ❖ किसी के जीवन अनुभवों से संबंधित विचारों की व्याख्या करना (लघू समूह के सामने)
- ❖ चरित्र और स्थितियों की परिचर्चा – अर्थ बताने को साझा करना एवं विचार विन्दु (लघू समूह मे)
- ❖ पाठ्य सामग्री आधारित लेखन– जैसे–दृश्य का सारांश, कहानी का वहिर्वेशन, किसी परिस्थिति का संवाद रूपान्तरण इत्यादि (व्यक्तिगत कार्य/Task)

UNIT-2 प्रचलित विषयों के साथ शामिल होना :– वर्णनात्मक/विवरणात्मक लेखन आधारित प्रस्तावित गतिविधियों –

- ❖ चयनित पाठ्य में शामिल हो सकेगें– लेख, संदर्भ सूची संग्रह लेखन, या प्रचलित पाठ्य के सारांश लेखन, छात्राध्यापकों के विषय क्षेत्र से लिया गया कोई थीम (विविध विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, साहित्य/भाषा)
- ❖ इस इकाई हेतु छात्राध्यापकों को समूह में विषयानुसार बँटते हुए विभिन्न पाठ्य सामग्रियों को विभिन्न जोड़े में पढ़ा जाना चाहिए।

UNIT-3 शैक्षिक लेखन में शामिल होनाः– चयनित पाठ्य सामग्री जो प्रचलित शैक्षिक लेख, सार या अध्याय जो लेखन के शैक्षिक, विद्यालयीकरण, शिक्षण या अधिगम से संबंधित हो, लिया जा सकता है। चयनित आलेख निश्चित बिन्दु, विचार या तर्क–वितर्क जो उक्त थीम के कुछ पहलू होने चाहिये। छात्राध्यापक को इस इकाई हेतु आकस्मिक रूप से समूहित किया जा सकता है।

प्रस्तावित गतिविधियाँः–

- ❖ थीम पर विचार करना एवं लेख पर तर्क–वितर्क हेतु 'पठन' (निर्देशित पठन–व्यक्तिगत या युग्म में)
- ❖ लेख/साहित्यिक लेखों का विश्लेषण, उप शीर्षक की पहचान, महत्वपूर्ण शब्द, विचारों का क्रम, ठोस विवरण का उपयोग, उदाहरण और/या सांख्यिकीय निरूपण इत्यादि (जोड़े में निर्देशित कार्य)
- ❖ थीम की परिचर्चा, अनुक्रियाओं और विचार विन्दुओं का साझा (लघू समूह परिचर्चा)
- ❖ अनुक्रिया/प्रतिक्रिया/जवाबीपत्र लेखन (व्यक्तिगत या युग्म में)
- ❖ चयनित पत्र, प्रश्न और उत्तर की प्रस्तुती (बड़े समूह में)

principal sir

EPC-2

शिक्षा में नाटक एवं कला

UNIT-1 प्रदर्श कला के रूप में नाटक एवं शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता

- ❖ नाटक की अवधारणा एवं शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता की समझ
- ❖ शिक्षण–शास्त्र के रूप में नाटक/अभिनय
- ❖ नाटक का आयोजन :– शुरूआती गतिविधियाँ एवं संसाधन नाटक से संबंधित मंडली
- ❖ नाटक खेलना :– कहानी, संवाद, पात्र, प्रतीक, विभिन्न परिस्थितियों का निर्माण करना।
- ❖ नाट्यशाला के अन्य रूप :– मंच प्रदर्शन, हँसी/व्यंग्य, अनुकरण नुक्कर नाटक
- ❖ भारतीय व क्षेत्रीय नाटक परंपराओं का ज्ञान
- ❖ समकालीन भारतीय स्थिति में नृत्य एवं नाटक की सामाजिक प्रासंगिकता
- ❖ अध्येता में नाट्य–कला की प्रशंसा

UNIT-2 दृश्य कला एवं शिल्प

- ❖ दृश्य कला एवं शिल्प का शिक्षा में औचित्य की समझ
- ❖ शिक्षण–शास्त्र के रूप में दृश्य कला एवं शिल्प
- ❖ दृश्य कला एवं शिल्प :– अनेक रूप, मूल संस्थान एवं इनके उपयोग
- ❖ भारतीय शिल्प परंपरा एवं क्षेत्रीय लोक कला का ज्ञान
- ❖ अध्येता में दृश्य कला एवं शिल्प का गुणानुनगाण

UNIT-3 कला समन्वित अधिगम एवं शिक्षक की भूमिकाः

- ❖ विद्यालयी पाठ्यचर्या में नाटक का जुड़ाव
- ❖ नृत्य/नाटक शोध एवं अन्य संभागों की कला से सहसंबद्धता
- ❖ विद्यालयी पाठ्यचर्या में कला एवं शिल्प का जुड़ाव
- ❖ विद्यालय एवं कक्षा–कक्ष को कला समन्वित अधिगम के जगह के रूप में प्रदर्श करना
- ❖ कला समन्वित अधिगम हेतु शिक्षक की तैयारी
- ❖ नृत्य/नाटक प्रसार एवं अध्ययन में मीडिया एवं प्राद्यौगिकी की भूमिका

Rama Shanker

EPC-3

आई0सी0टी0 की समालोचनात्मक समझ

UNIT-1 आई0सी0टी0 और कम्प्यूटर अनुप्रयोग के आधारभूत सामग्री/मूल तत्व :–

- ❖ सूचना और संचार प्राद्यौगिकी :– अर्थ, प्रकृति और फायदे
- ❖ नई सूचना प्राद्यौगिकी का उद्‌भव :– संगणना और दूरसंचार का सम्मिलन
- ❖ कम्प्यूटर हाईवेयर के मौलिक तत्व (रचना, अदा उपकरण, प्रदा उपकरण, संग्रहण उपकरण, प्रदर्श उपकरण), हाईवेयर समस्या दूर करना एवं उपचार
- ❖ संक्रिया पद्‌धति :– अर्थ और प्रकार, कंप्यूटर के प्रकार
- ❖ कम्प्यूटर नेटवर्क :– LAN, WAN, इंटरनेट– अवधारणा एवं संरचना इंटरनेट संसाधन को ज्ञात करना– नीविगेट करना, सर्च करना, सेलेक्ट करना
- ❖ डिजीटल कैमरा, कैम कॉर्डर, स्कैनर, प्रभावकारी श्वेत पट्‌ट के उपयोग और मल्टीमीडिया संसाधन के सृजन और उपयोग हेतु मल्टीमिडिया प्रोजेक्टर
- ❖ कम्प्यूटर सुरक्षा :– हैकिंग, वाइरस, स्पाईवेयर, दूरूपयोग, एण्टीवाइरस फायर बॉल और सुरक्षित अभ्यास।

UNIT-2 कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग के मूल तत्व :–

- ❖ सॉफ्टवेयरः– अर्थ एवं प्रकार (पद्‌धति हेतु सॉफ्टवेयर, अनुप्रयोग, सॉफ्टवेयर, स्वामित्व सॉफ्टवेयर, खुले संसाधन सॉफ्टवेयर, शेयर वेयर और फ्रीवेयर)
- ❖ खुले साधन वाले सॉफ्टवेयर :– अवधारणा, दर्शन, प्रकार एवं फायदे खुले संसाधन वाले शैक्षिक सॉफ्टवेयर
- ❖ MS-WINDOWS से परिचय :– डेस्कटॉप नेविगेट करना, नियंत्रण पैनल, फाईल प्रबंधन, एक्सप्लोरर एवं अतिरिक्त सहायक

Rama Shanker

- ❖ MS- ऑफिस से परिचय एवं ओपेन ऑफिस
- ❖ माइक्रोकंप्यूटर उपयोग के मूल तत्व (वर्ड प्रोसेसिंग, स्प्रेडशीट, प्रस्तुती और आरेरतन) एवं इसके शैक्षिक अनुप्रयोग

Rama Shanker

- ❖ उपयोगी औजार :– Pdf बनाने वाला, फाइल संग्राहक, फाइल बदलाव करने वाला, एण्टीवाइरस
- ❖ मल्टीमीडिया के अर्थ, प्रकार, फायदे एवं मल्टीमिडिया संसाधन का मूल्यांकन
- ❖ शिक्षा में मल्टीमिडिया के विकास एवं प्रयोग मूल्यांकन करना, सेविंग और बुकमार्क करना
- ❖ ई–विषय वस्तु :– रूपरेखा, विकास, मानक, अधिगम सामग्री और पुनःउपयोग और ऑथरिंग टूल

UNIT-3 आई0सी0टी0 आधारित शिक्षा एवं मूल्यांकन

- ❖ कम्प्यूटर आधारित अनुदेश, कंप्यूटर सहायक अनुदेश और कंप्यूटर प्रबंधित अनुदेश
- ❖ शैक्षिक सॉफ्टवेयर, अवधारणा, शैक्षिक सॉफ्टवेयर की जरूरत एवं मूल्यांकन
- ❖ प्राद्यौगिकी सहायक प्रस्तुती/परियोजना कार्य/ दत्त कार्यः–
  अवधारणा, विद्यार्थियों के शैक्षिक MM प्रस्तुती/ परियोजना / दत्त कार्य की जरूरत एवं मूल्यांकन
- ❖ साहित्यिक चोरी :– प्राद्योगिकी समर्थित विद्यार्थियों के दत्त कार्य/परियोजना कार्य के संबंध में साहित्यिक चोरी की अवधारणा/साथ ही शिक्षा में साहित्यिक चोरी को कम करने के उपाय
- ❖ विद्यालयी स्थिति में प्रश्न बैंक का विकास करना (मूल्यांकन प्रक्रिया सन्निहित) :– 'हॉट पोटैटोस' का उपयोग करते हुए विविध प्रकार के प्रश्न जैसे– बहुविकल्पी प्रश्न, लघु उत्तरीय, उलझे वाक्य रूप में प्रश्न, क्रॉसवर्ड मिलान करने वाले प्रश्न, रिक्त स्थान पूर्ति वाले अभ्यास प्रश्नों से प्रश्न बैंक का विकास